लोकसत्ता अखबार के सम्पादक सुधीर जोगलेकर अपने अखबार के लिए एक कॉलम करते रहे हैं – टिकुली एवढ़े देश यानी बिन्दी बराबर देश। इसने हमें एक किताब की याद दिला दी। उसमें एक छोटे-से देश रिक्याविक का ज़िक्र था। लिखा था कि वहाँ सालों से कोई अपराध नहीं हुआ था। होता भी कैसे? पता चला आप बैंक पहुँचे हैं डाका डालने और वहाँ बैठा कोई व्यक्ति आपको नाम से पुकार ले। और क्या पता चाय पीने का आग्रह ही करने लगे!

हमें लगा बड़ा दिलचस्प होगा ऐसे देशों के बारे में और जानना। जहाँ के सब लोग शायद एक दूसरे को जानते होंगे। कोई चाहे तो साइकिल उठाए, और कहे, "अभी दो-चार दिनों में आती हूँ। ज़रा, अपने देश का एक चक्कर लगा आऊँ।" एक देश जहाँ शायद पचास-सौ स्कूल होते होंगे। कभी मन करे तो देश के सब बच्चे कहीं पिकनिक मनाने चले जाएँ।

जब खोजने बैठे तो पता चला कि छोटे देशों की सूची बहुत लम्बी है। दुनिया का सबसे छोटा देश सिर्फ .2 वर्ग मील में बसा है। रोम और इटली से घिरे इस देश – वैटिकन सिटी – में कोई भी स्थायी रूप से नहीं रह सकता है। इसकी जनसंख्या है सिर्फ 770। हमारे देश में तो एक गली में ही इससे ज़्यादा लोग रहते होंगे! पर, क्या जनसंख्या या क्षेत्रफल ज़्यादा होने से कोई देश सचमुच बड़ा हो जाता है? दुनिया के कई देश हैं जहाँ बहुत विविधता है। भोजन में विविधता, पहनावे में विविधता, तरह-तरह के त्यौहार, नृत्य, संगीत ....। कहीं पहाड़, कहीं मैदान। हम किसी देश के हुए तो क्या हुआ। ये सारी रंग-बिरंगी दुनिया भी तो हमारी ही है। तुम्हारे सपनों का देश कैसा होगा?

सेंट लूसिया

कैरेबियन सागर में कई छोटे-छोटे द्वीप हैं – ट्रिनिदाद, सेंट किट्स और नेविस, ग्रेनेडा...। नक्शे में ये द्वीप छोटी-छोटी बूँदों बराबर दिखते हैं। ऐसी ही एक बूँद है – सेंट लूसिया। इस द्वीप में कुल मिलाकर कोई एक लाख सत्तर हज़ार लोग रहते हैं। और उसका क्षेत्रफल है – 620 वर्ग किलोमीटर। हमारी दिल्ली के आधे इलाके बराबर। छोटे देशों का यह सफर हम शुरू करते हैं इसी कैरिबियाई देश सेंट लूसिया से...

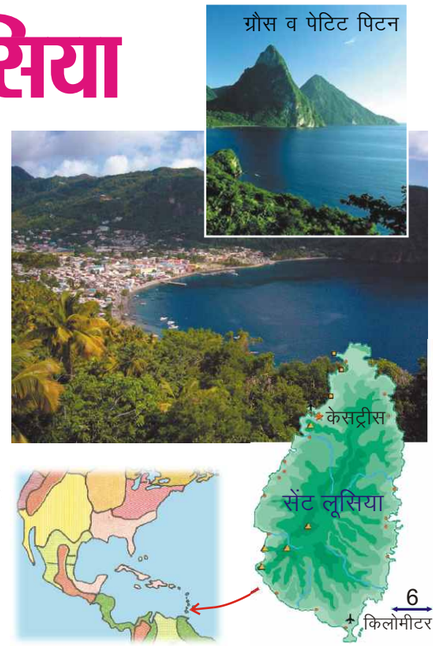

सेंट लूसिया का इतिहास उथल-पुथल भरा रहा है। इस पर कब्ज़ा करने के लिए लगभग 1550 ईस्वी के आसपास से अँग्रेज़ों और फ्रांसिसियों के बीच तनातनी चलती रही। कोई डेढ़ सदी तक इनके बीच बेहद तबाही मचाने वाले 14 युद्ध भी हुए। अन्ततः 1814 में अँग्रेज़ों ने इसे अपने नियंत्रण में ले लिया। और 22 फरवरी 1979 में सेंट लूसिया स्वतंत्र देश बना।

आज का सेंट लूसिया

किसी भी देश की तरह सेंट लूसिया पर भी वहाँ रहे लोगों की छाप दिखाई देती है। 200 ईस्वी में यहाँ सबसे पहले अरावक आए और फिर कैरिबियाई। कहा जाता है कि अरावक बोलीविया, पेरू और अमेज़न के जंगलों में रहने वाले बहुत ही शान्तिप्रिय आदि-वासी थे। धीरे-धीरे वे वेनेज़ुएला,पेरू और कैरिबियन देशों में चले गए। ये बढ़िया शिकारी, किसान, मछुआरे व हुनरमन्द कलाकार थे। कसावा, शकरकन्द इनका खास भोजन था। आज इनकी पीढ़ी तो बची नहीं है पर हाँ, कसावा-ब्रेड और स्थानीय क्राफ्ट की चीज़ें आज भी दिखाई दे जाती हैं। बाद के समय में सेंट लूसिया के खेतों, बगीचों वगैरह में काम करने के लिए अफ्रीका से गुलाम और मज़दूर लाए जाते थे। आज सेंट लूसिया में ज़्यादातर लोग इन्हीं के वंशज हैं। पूर्वी भारत से भी चीनी मिलों में काम करने के लिए यहाँ मज़दूर लाए गए। आज भी यहाँ काफी संख्या इन लोगों की है।

ज़ेनदेली टी छिपकली

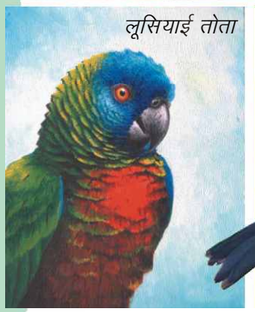
लूसियाई तोता

लूसियाई ओरिओल

यह छोटा-सा देश इस बात पर भी गर्व कर सकता है कि यहाँ के दो बाशिन्दों को नोबल पुरस्कार मिला है। 1979 में अर्थशास्त्र के लिए सर आर्थर लुइस को और 1992 में साहित्य के लिए कवि डेरेक वॉलकॉट को।

सेंट लूसिया बहुत ही खूबसूरत देश है। वर्षा वन, ऊँची चोटियाँ, घाटियाँ, प्राचीन किले, गरम पानी के सोते, बगीचे, झरने, वन्यजीव... सब मिलकर इसे खास बनाते हैं। यहाँ के वन दुनिया के कुछ सबसे बड़े फर्न, दुर्लभ पक्षियों और फूलों का रहवास हैं।

सेंट लूसिया में कैरिबियाई सागर के पास है **ग्रौस व पेटिट पिटन**। आसपास हैं घने पेड़ों से घिरे पहाड़। कभी-कभी फटने के बाद लावा ज़्वालामुखी के मुँह पर ही सूखकर जम जाता है। इसे पिटन या वॉल्कैनिक प्लग कहते हैं। अगर गरम लावा अन्दर ही रह जाए तो भयानक विस्फोट हो सकता है। लम्बे समय में इनके आसपास के पत्थर घिस जाते हैं पर ये ज्यों के त्यों बने रहते हैं।

यहाँ 5 से 15 साल के बच्चों के लिए शिक्षा मुफ्त और अनिवार्य है

यहाँ का लोकप्रिय नाच है - क्वाड्रिली

यहाँ की मिट्टी बहुत उपजाऊ है। लगभग 6 किस्म के केले यहाँ होते हैं जिनका बड़ी मात्रा में निर्यात होता है। इसके अलावा अनानास, पपीते, आम, अमरूद, कॉफी और नारियल भी बहुत होते हैं। ताज़े फलों को ताज़ी समुद्री मछली के साथ मिलाकर यहाँ के लोग लज़ीज़ व्यंजन बनाते हैं।

यहाँ का ज़्वालामुखी (सल्फर स्प्रिंग्स) सोफ्रेरी में है। यहाँ पिछला ज़्वालामुखी 1700 के आसपास फूटा था। इसमें लावा की बजाय भाप निकली थी। आज भी यहाँ से सल्फर निकलती जा रही है। गड्ढों में खनिज मिला पानी उबलता रहता है। भाप से सल्फर की तेज़ गंध आती रहती है। दिन में यह गंध कम होती है लेकिन रात में दूर-दूर तक इसे सूँघा जा सकता है।

सेंट लूसिया के समुद्र तटों के बारे में क्या कहें! एक से बढ़कर एक हैं। सफेद रेत, हरी-भरी पहाड़ियों, पाम के पेड़ों से ढँके...। मई 1992 से यहाँ हर साल जैज़ महोत्सव होता है।